|| श्रीहरिः ||

# भजनगंगा

आचार्य श्री किशोरजी व्यास

# अनुक्रम

# प्रेममुदित मन से कहो

प्रेममुदित मन से कहो राम राम राम ।
राम राम राम, श्री राम राम राम ॥

पाप मिटे दुःख कटे लेते राम नाम ।
भव-समुद्र सुखद नाव एक राम नाम ॥१॥

परम शांति सुख निधान नित्य राम नाम ।
निराधार को आधार एक राम नाम ॥२॥

परम गौप्य परम इष्ट मंत्र राम नाम ।
संत हृदय सदा वसत एक राम नाम ॥३॥

महादेव सतत जपत दिव्य राम नाम ।
काशी मरत मुक्त करत कहत राम नाम ॥४॥

माता-पिता, बंधु-सखा सबहि राम नाम ।
भक्त जनन जीवन धन एक राम नाम ॥५॥

# कृष्ण गोविंद गोपाल गाते चलो

कृष्ण गोविंद गोपाल गाते चलो
मनको विषयों के विष से हटाते चलो ।।धृ।।

इंद्रियों के ना घोडे विषयों में अडे,
जो अडे भी तो संयम के कोडे पडे
तन के रथ को सु-पथ पर चलाते चलो ।। कृष्ण... ।।१।।

नाम जपते रहो, काम करते रहो
पाप की वासनाओं से डरते रहो
सद्‌गुणों का परम धन कमाते चलो ।। कृष्ण... ।।२।।

लोग कहते हैं 'भगवान आते नहीं'
रुक्मिणी की तरह हम बुलाते नहीं
द्रौपदी की तरह धुन लगाते चलो ।। कृष्ण... ।।३।।

लोक कहते हैं 'भगवान खाते नहीं'
भिल्लिनी की तरह हम खिलाते नहीं
शाकप्रेमी विदुरसम जिमाते चलो ।। कृष्ण... ।।४।।

दुःख में तडपो नहीं सुख में फूलो नहीं
प्राण जाये मगर धर्म भूलो नहीं
धर्म धन का खजाना लुटाते चलो ।। कृष्ण... ।।५।।

वख्त आयेगा ऐसा कभी ना कभी
हम भी पायेंगे प्रभु को कभी ना कभी
ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो ।। कृष्ण... ।।६।।

# हर देश में तू

हर देश में तू हर वेश में तू
तेरे नाम अनेक तू एक ही है ॥
तेरी रंगभूमि यह विश्व भरा
हर खेल में मेले में तू ही तू है ॥धृ॥

सागर से उठा बादल बनकर
बादल से फूटा जल होकर ॥
कहीं नहर बना नदियाँ गहरी
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है ॥१॥

मिट्टी से अणु-परमाणु बना
इस दिव्य जगत का रूप लिया ॥
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना
सौंदर्य तेरा तू एक ही है ॥२॥

यह दृश्य दिखाया है जिसने
वह है गुरुदेव की पूर्ण दया ॥
तुकड्या कहे और तो कोई नहीं
बस तू और मैं सब एक ही है ॥३॥

# मनोहर मोहनी झाँकी

मनोहर मोहनी झाँकी, ये मनमोहन कन्हैया की ।
चपल चितचोर छबि बाँकी, ये मनमोहन कन्हैया की ॥धृ॥

सिरपर मोर पंखों का, मुकुट ये पा रहा शोभा ।
अधर पर रसभरी बँसी, ये मनमोहन कन्हैया की ॥१॥

सुघड दाडिम से दन्तन की, दमकती दिखती आभा ।
सुधा बरसाती है वाणी, ये मनमोहन कन्हैया की ॥२॥

मृदुल घुँघराली ये अलके, लेती मुखचंद्र पर झोंके ।
परम सुख-शांति मुसकाती, ये मनमोहन कन्हैया की ॥३॥

अचानक ही अजब लट ये, जाल में बाँधे अलबेला ।
मटकती चाल मस्तानी, ये मनमोहन कन्हैया की ॥४॥

कटीले काम कद हारी, छबीले रसभरे नैना ।
मदन घनश्याम की भृकुटी, ये मनमोहन कन्हैया की ॥५॥

प्रबल माया के बंधन में, बँधा तब जीव गति पाता ।
सुधा बहती दयादृष्टि से मनमोहन कन्हैया की ॥६॥

# मंदिर है ये हमारा

सब के लिए खुला है　　मंदिर है ये हमारा।
मतभेद को भुलाता　　मंदिर है ये हमारा　　॥धृ॥

आओ कोई भी पंथी　　आओ कोई भी धर्मी।
देशी-विदेशियों का　　मंदिर है ये हमारा　　॥१॥

संतों की उच्च वाणी　　सब जन है भाई-भाई।
सब देवता समाता　　मंदिर है ये हमारा　　॥२॥

मतभेद होने पर भी　　मनभेद हो न पाएँ
हर एकता का हामी　　मंदिर है ये हमारा　　॥३॥

मानव का धर्म क्या है　　मिलती है राह जिस में।
चाहता भला सभी का　　मंदिर है ये हमारा　　॥४॥

आओ सभी मिलेंगे　　बैठेंगे प्रार्थना में
तुकड्या कहे अमर है　　मंदिर है ये हमारा　　॥५॥

# उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहाँ जो सोवत है
जो सोवत है सो खोवत है
जो जागत है सो पावत है ॥१॥

टुक नींदसे अँखियाँ खोल जरा,
ओ गाफिल, प्रभु से ध्यान लगा
यह प्रीत करन की रीत नहीं,
प्रभु जागत है, तू सोवत है ॥२॥

अय जान, भुगत करनी अपनी
ओ पापी पाप में चैन कहाँ?
जब पाप की गठरी सीस धरी,
फिर सीस पकड क्यों रोवत है? ॥३॥

जो कल करे सो आज कर ले
जो आज करे सो अब कर ले
जब चिडियन खेती चुग डाली,
फिर पछताये क्या होवत है? ॥४॥

# इतना तो करना स्वामी

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले ।
गोविंद नाम लेकर, तब प्राण तन से निकले ॥१॥

श्रीगंगाजी का तट हो, यमुना का बँसी वट हो ।
मेरा साँवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ॥२॥

पीतांबरी कसी हो, छबि ये ही मन बसी हो ।
होठों पे कुछ हँसी हो, जब प्राण तन से निकले ॥३॥

सिर सोहना मुकुट हो, मुखडे पे काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले ॥४॥

केसर तिलक हो आला, गल बैजयंती माला ।
मुख चंद्र-सा उजाला, जब प्राण तन से निकले ॥५॥

नेत्रों में प्रेम-जल हो, मेरे मुख में तुलसी-दल हो ।
अंतिम समय सफल हो, जब प्राण तन से निकले ॥६॥

उस समय शीघ्र आना, नहीं श्याम भूल जाना ।
बँसीकी धुन सुनाना, तब प्राण तन से निकले ॥७॥

# बडी देर भई नंदलाला

बडी देर भई नंदलाला
तेरी राह तके ब्रिजबाला ।
ग्वाल बाल एक-एक से पूछे
कहाँ है मुरलीवाला रे ।।धृ।।

कोई न जाए कुंज गलिन में
तुझबिन कलियाँ चुनने को ।
तरस रहे हैं जमुना के तट
धुन मुरली की सुनने को ।
अब तो दरस दिखा दे नटवर, क्यों दुविधा में डाला रे ।।१।।

संकट में है आज वो धरती
जिस पर तूने जनम लिया
पूरा कर दे आज वचन जो
गीता में जो तूने दिया ।
कोई नही है तुझबिन मोहन, भारत का रखवाला रे ।।२।।

# यह पुण्य प्रवाह हमारा

यह कलकल छलछल बहती, क्या कहती गंगा धारा
युग-युग से बहता आता, यह पुण्यप्रवाह हमारा ॥धृ॥

हम इस के लघुतम जलकण
बनते मिटते हैं क्षणक्षण ।
अपना अस्तित्व मिटाकर
तन-मन-धन करते अर्पण
बढते जाने का शुभ प्रण, प्राणों से हम को प्यारा ॥१॥

इस धारा में घुल-मिलकर
वीरों की राख बही है ।
इस धारा को कितने ही
ऋषियों ने शरण गही है
इस धारा की गोदी में, खेला इतिहास हमारा ॥२॥

यह अविरत तप का फल है
यह राष्ट्र प्रवाह प्रबल है ।
शुभ संस्कृति का परिचायक
भारत माँ का आँचल है
यह शाश्वत है चिरजीवन, मर्यादा धर्म सहारा ॥३॥

क्या इसको रोक सकेंगे
मिटने वाले मिट जाये
कंकड पत्थर की हस्ती
क्या बाधा बनकर आये
ढह जायेंगे गिरि पर्वत, काँपे भू-मंडल सारा ॥४॥

# सब भार तुम्हारे हाथों में

अब सौंप दिया इस जीवन का<br>
सब भार तुम्हारे हाथों में ।<br>
है जीत तुम्हारे हाथों में<br>
और हार तुम्हारे हाथों में ॥धृ॥

मेरा निश्चय बस अब एक यही<br>
एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं<br>
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का<br>
सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥१॥

यदि मानव का मुझे जन्म मिले<br>
तो तव चरणों का पुजारी बनूँ<br>
इस पूजक की इक-इक रग का<br>
हो तार तुम्हारे हाथों में ॥२॥

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ<br>
ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।<br>
मेरे सब गुण दोष समर्पित हो<br>
करतार! तुम्हारे हाथों में ॥३॥

जब-जब संसार का कैदी बनूँ<br>
निष्काम भाव से कर्म करूँ ।<br>
फिर अंत समय में प्राण त्यजूँ<br>
भगवान! तुम्हारे हाथों में ॥४॥

मुझमें तुममें भेद यही<br>
मैं नर हूँ तुम नारायण हो<br>
मैं हूँ संसार के हाथों में<br>
संसार तुम्हारे हाथों में ॥५॥

# हरि घ्या, हरि घ्या

गौळण भोळी हरिरस विकते, विकते हरिचे नाम ।
हरि घ्या, हरि घ्या, हरि घ्या म्हणते, करिते हरीचे काम ।।धृ।।

भक्तिरसाची रुची आगळी ।
म्हणती सगळी तिला बहकली ।
चिंता परि ना तिला कशाची । गाते हरिचे नाम । हरि घ्या. ।।१।।

मस्करि करिती सारे पुसती ।
मला दाखवी हरिची मूर्ति ।
घडा उतरुनी अलगद म्हणते । 'पहा पहा घनश्याम' । हरि घ्या. ।।२।।

हातावर ती नवनित देते ।
सगळे हसती 'हरि' ती म्हणते ।
ध्यान तिचे ना कधी भंगते । रमते घेऊन नाम । हरि घ्या. ।।३।।

वृत्ति रंगता प्रभुनामामधि ।
सुधबुध हरते घडे समाधि ।
वेड, पिसे जरि जना वाटते । घडते हरिचे काम । हरि घ्या. ।।४।।

# गुण कोठुनि आणिले

भगवंताला वेडे केले गुण कोठुनि आणिले ।
असले गुण कोठुनि आणिले ॥धृ॥

तुझ्या मुखाने देव बोलला । म्हणती त्याला मुरलीवाला ॥
काय मोहिनी घातलि हरिला, मधुर मधुर घडले ॥ असले... ॥१॥

वेणू तू भाबडी सानुली । चतुराई ना कधी पाहिली ॥
अधरामृत परि प्रभु पाजितो, अंतरि साठविले ॥ असले... ॥२॥

हलकी हलकी, मोकळी मोकळी, हृदयी भरली तुझ्या पोकळी ॥
रंध्रांनी नटले जीवन परि, हरिला आवडले ॥ असले... ॥३॥

स्रवते करुणा तुझ्या सुरातुन । वीररसाला भरती दारुण ॥
भक्तीच्या गंगेचे त्यातुन, निर्मळ पय भरले ॥ असले... ॥४॥

# खरा तो एकची धर्म

खरा तो एकची धर्म । जगाला प्रेम अर्पावे ॥धृ॥

जगी जे हीन अतिपतित
जगी जे दीन पददलित
तया जाऊनि उठवावे । जगाला प्रेम अर्पावे ॥१॥

सदा जे आर्त अतिविकल
जयांना गांजती सकल
तयां जाऊन हंसवावे । जगाला प्रेम अर्पावे ॥२॥

कुणा ना व्यर्थ हिणवावे
कुणा ना व्यर्थ शिणवावे
समस्ता बन्धु मानावे । जगाला प्रेम अर्पावे ॥३॥

प्रभूची लेकरे सारी
तयाला सर्वही प्यारी
कुणा ना तुच्छ लेखावे । जगाला प्रेम अर्पावे ॥४॥

असे हे सार धर्माचे
असे हे सार सत्याचे
परार्था प्राण ही द्यावे । जगाला प्रेम अर्पावे ॥५॥

# रामजीरो नाव म्हने

रामजीरो नाव म्हने मीठो घणो लागे रे ।।धृ।।

रामजीरा मूंग चावळ रामजीरी बाजरी ।
रामजीरो घरको धंधो रामजीरी हाजरी ।
रामजीरी परसादीसु पाप सारा भागे रे ।।१।।

भाई-बंधु टाबर टोली रामजीरा छोकरा ।
माय-बाप, दादा-दादी, रामजीरा डोकरा ।
सगळा मिलकर रेवा म्हे तो रामजीरा सागे रे ।।२।।

रामजीरा हेली नोहरा रामजीरा झूँपडा ।
रामजीरा खेतामाही रामजीरा रुँखडा ।
रामजी है माछे म्हारा रामजी है आगे रे ।।३।।

रामजीरी घर की कुंजी रामजी लगावणिया ।
रामजीरो लेणो देणो रामजी चुकावणिया ।
शरणागतरी सारी चिंता रामजीने लागे रे ।।४।।

रामजीरी लीला गावा, रामजीरी कीरती ।
बोले चाले दीखे सोही रामजीरी मूरति ।
रामजीरा संत आया भाग म्हारा जाग्या रे ।।५।।

# उसे इन्सान कहते हैं!

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं ।।

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है, कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं ।।१।।

यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँसके जीता है, कोई जीता है रो-रोकर ।
जो गिरकर फिर सम्हल जाये, उसे इन्सान कहते हैं ।।२।।

अगर गलती रुलाती है, तो राहे भी दिखाती है ।
मनुज गलती का पुतला है, जो अक्सर हो ही जाती है ।
जो कर ले ठीक गलती को, उसे इन्सान कहते हैं ।।३।।

यों भरने को तो दुनिया में, पशु भी पेट भरते हैं।
जिन्हें इन्सान का दिल है, वे नर परमार्थ करते हैं।
पथिक जो बाँटकर खाये, उसे इन्सान कहते हैं ।।४।।

# कर प्रणाम तेरे चरणों में

कर प्रणाम तेरे चरणों में, लगता हूँ अब तेरे काज ।
पालन करने को आज्ञा तव, मैं नियुक्त हूँ आज ।।धृ।।

अंतर में स्थित रहकर मेरे, बागडोर पकडे रहना ।
निपट निरंकुश चंचल मन को, सावधान करते रहना ।।१।।

अन्तर्यामी को अन्तःस्थित देख स-शंकित होवे मन ।
पाप-वासना उठते ही, हो नाश लाज से वह जल-भुन ।।२।।

जीवों का कलरव जो, दिनभर सुनने में मेरे आवे ।
तेरा ही गुणगान जान, मन प्रमुदित हो अति सुख पावे ।।३।।

तू ही है सर्वत्र व्याप्त हरि ! तुझ में यह सारा संसार ।
इसी भावना से अंतर भर मिलूँ सभी से तुझे निहार ।।४।।

प्रतिपल निज इन्द्रिय समूह से, जो कुछ भी आचार करूँ ।
केवल तुझे रिझाने को, बस तेरा ही व्यवहार करूँ ।।५।।

# हरिनाम हे फुकाचे

हरिनाम हे फुकाचे । जप मानवा तू वाचे ।।धृ।।

मन लावूनी विचारी । धरी एकनिष्ठता ही ।
निष्काम गा मुरारी । अति हर्ष देव नाचे ।।१।।

सोडूनि कल्पना ही । निंदा स्तुति जगाची ।
रंगोनि एक व्हावे । सुख घे हरी पदाचे ।।२।।

नच जाई पुण्य धामा । बस रे करीत कामा ।
कामात लक्ष रामा । वरी ठेव अंतरीचे ।।३।।

तुकड्या म्हणे ही वेळा । साधूनी घे गड्या तू ।
अनमोल जन्म जाता । मग मार त्या यमाचे ।।४।।

# श्रीकृष्ण : शरणं मम

श्रीकृष्ण : शरणं मम,
मंत्र सदा तू जपतो जा
आव्यो छे तू आ संसारे,
सफल जनम तू करतो जा ।।धृ।।

मन वाणी काया वश राखी,
ममतानो बोझो दूर नाखी ।
धन दीधु छे धणिए तुजने
पेट भुख्याना भरतो जा ।।१।।

आ जगमां तू महान कहावे
आस करी कोई आंगन आवे ।
दीन दुखीनी वातो तारी
कर्ण पटे तू धरतो जा ।।२।।

हूं पदनी ग्रंथीने छेदी,
मायाना घेरागण जोदी ।
प्रकाशमय श्री प्रभुना पंथे
हळवे हळवे सरतो जा ।।३।।

गोविंद गुरुने शरणे ग्रही ले,
दुःख पडे तो दुःख सही ले ।
मानसरोवर मोंघा मोती
हंस बनीने चरतो जा ।।४।।

# वैष्णव जन तो तेने कहिए

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड पराई जाणे रे ।
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ।।धृ।।

सकळ लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे ।
वाच काछ मन संयम राखे, धन धन जननी तेनी रे ।।१।।

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने माता रे ।
जिव्हा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे ।।२।।

मोह माया व्यापे नहीं जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे ।
रामनामशुं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेना तनमां रे ।।३।।

वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे ।
भणे नरसैयो तेनु दरशन करता, कुळ एकोतेर तार्या रे ।।४।।

# हरि वाजिव गीता मुरली

भारता तारि या काळी काळी
हरि वाजिव गीता मुरली ||धृ||

कलहाचे नाचे भूत, समतेचा झाला अंत
पडलेच ज्ञान बंदीत, हे सत्य करी आकांत
न्यायश्री अश्रू ढाळी ढाळी || हरि वाजिव.... ||१||

लोकांस कळेना वर्म, मानिती अधर्मा धर्म
तत्त्वाचे सरले प्रेम, प्रेमाचे नुरले नाम
अज्ञाने जनता भरली भरली || हरि वाजिव.... ||२||

तव मुरली मोहन गीत, निर्जिवा करी जिवंत
षंढास समर पंडित, रणधीर रिपुस भयभीत
अबलांस करी बलशाली || हरि वाजिव.... ||३||

करि स्वजनां विक्रमशाली, भारतास वैभवशाली
धैर्याची झडू दे भेरी, नाचू दे धर्मबल समरि
होऊ दे सत्य जयशाली शाली || हरि वाजिव.... ||४||

धाव रे धाव वनमाली, दौर्बल्य आमुचे जाळी
तुजविण नाही कुणी वाली, आम्हांस तारि या काली
ही एकच आशा उरली उरली || हरि वाजिव.... ||५||

# भज राधे गोविंदा

भज राधे गोविंदा रे पगले, भज राधे गोविंदा ॥
तन पिंजडे को छोड कहीं, उड जायेगा प्राणपरिन्दा रे ॥धृ॥

झूठी सारी दुनियादारी, झूठा तेरा मेरा रे ।
आज रुके कल चल देगा, ये जोगीवाला फेरा रे ।
भेद-भाव को छोड के पगले, मत कर तू परनिन्दा रे ॥१॥

इस जीवन में सुख की कलियाँ, और सभी दुःख के काँटे ।
सुख में हर कोई हिस्सा बाँटे, कोई भी ना दुःख बाँटे ।
सब साथी हैं, झूठे जगत के, सच्चा एक गोविंदा रे ॥२॥

इस चादर को बडे जतन से, ओढे दास कबीरा रे ।
इसे पहन विष-पान कर गई, प्रेम-दिवानी मीरा रे ।
इस चादर को पाप-कर्म से, मत कर तू अब गन्दा रे ॥३॥

# तू येशील केव्हां हरिऽ ?

तू येशील केव्हां हरि?
गोकुळ हे झाले वेड्यापरी ॥धृ॥

पाहण्या दीन भारता
गरुडाला सजवी आता ।
घे मंजुळ मुरली करी.... ॥१॥

भडकली आग चहुकडे
तुला चैन कशी रे पडे?
ये धावत गरुडावरी... ॥२॥

गोप-गोपी करिती तळमळ
घेतिना वासरे जळ ।
ही वेळ दिसेना बरी... ॥३॥

तुका म्हणे धर्म रक्षणा
तू वचन दिले मोहना ।
लाविसी वेळ कितितरी... ॥४॥

# मंगलमय नाम तुझे

मंगलमय नाम तुझे सतत गाऊ दे ॥धृ॥

दुर्बल या हृदयातुनि
चंचल या चित्तातुनि ।
झुरझुरत्या नेत्रातुनि
स्वरुप पाहु दे... मंगलमय... ॥१॥

मन मानस मंदिरात
सिंहासन तव प्रशांत ।
सोऽहं ध्वनि गीत गात
रंगि रंगु दे... मंगलमय... ॥२॥

अंधाऱ्या निर्जनवनि
विषयांच्या काट्यातुनि ।
चौऱ्यांशी लक्षांतुनि
पार जाऊ दे... मंगलमय... ॥३॥

संतांची बोधधुळी
लागो या देहकुळी ।
भक्तीच्या प्रेमजळी
मग्न होऊ दे... मंगलमय... ॥४॥

भवसागर कठिण घोर
षड्रिपु हे करिती जोर ।
तुकड्याची नाव पार
सहज होऊ दे... मंगलमय... ॥५॥

# आपा हरिगुण गावा

चालो रे, भाइडा आपा हरिगुण गावा ।
कलयुग में सतयुग लावा ॥ आपा... ॥धृ॥

रुठे भाई-बन्धु चाहे रुठे जग सारो
एक नहीं रुठे भाया प्रभुजी हमारो ।
जाकी दयासू भव तिर जावा ॥ आपा... ॥१॥

आडोसी पडोसीने भी संग लेता चालोजी ।
बैरी भी होवे तो भाया गले से लगालोजी ।
हिलमिल चालो घणो सुख पावा ॥ आपा... ॥२॥

निंदडली फिरेली आडी, करेली बिगाडो ।
सुख सारा हेला मारे, पाछा थे पधारो ।
पाछा फिऱ्यासू घणा पछतावा ॥ आपा... ॥३॥

गली तो गली में रामधुन लग जावे ।
देखा फेरु कईया, सतयुग नहीं आवे
इण जगत में ना फिर आवा ॥ आपा... ॥४॥

# मळतो रेजे

मळतो रेजे मळतो रेजे मळतो रेजे रे ।
ओ कन्हैया कोक वार मिळतो रेजे रे ।।धृ।।

तारा आव्याथि मारी आशानी वेलडी ।
फाली फूलीने रहे आनन्द मा डोलती ।
दया धरी दास उपर ढळतो रेजे रे ।।१।।

दिन नो दयाळु तू तो भक्त प्रतिपाळ छे ।
गोविंद तू गावडि नो साचो रखवाळ छे ।
मारे घेरे कोक दिवस वळतो रेजे रे ।।२।।

तारे अनेक छतां मारो तू एक छे ।
तारा रटना ए मारा जीवननी टेक छे ।
दूधमां साकरनी जेम भळतो रेजे रे ।।३।।

रोज रोज चालू छे तारा संभारणा ।
खूला मुक्या छे मे तो अन्तरना बारणा ।
गीताना कोल उपर मळतो रेजे रे ।।४।।

ओ कन्हैया कोक वार मळतो रेजे रे

# सेवा करो स्वयं ने जाणो

सेवा करो स्वयं ने जाणो
मानो सरजन हार
चाह रहित बन जग में विचरो
प्रभु शुं करल्यो प्यार ॥धृ॥
दुखी देख दिल करुणित होवो
सुखी निरख आनंद मनाओ
सेवारो यो मर्म समझ ल्यो
निज नो निज उपकार ॥१॥
करुणा सूं भोगेच्छा छूटे
चित्त प्रसन्न खिन्नता टूटे ।
पर अधिकार तनिक ना लूटे
त्यागे निज अधिकार ॥२॥
करुणित राजा रन्तिदेव ज्यूं
आनंदित मन मुनि वसिष्ठ ज्यूं
सुख दीजो सुख लीजो जगसु (भाया)
हो जा जो यूं पार ॥३॥
जान्यो जननी कपिल देव शुं
भूप भरतरी माँ मैनाशुं ।
राज पाट तज दियो बुद्ध ज्यूं
तुलसी तज दी नार ॥४॥
जो चाहो सो होवे कोनी
जो होवे सो भावे कोनी
जो भावे सो रहवे कोनी
सभी चाह बेकार ॥५॥
कानुडेरी विनती सुनजो
निज विवेक ने आदर दीजो
हरी री शरण सुखद कर लीज्यो
मिल जासी हरी आऽर ॥६॥

# श्रीवृन्दावन - धाम

वृन्दावन-धाम अपार, रटे जा राधे-राधे ।
भजे जा राधे-राधे! कहे जा राधे-राधे ॥१॥

वृन्दावन गलियाँ डोले, श्रीराधे-राधे बोले ।
वाको जनम सफल हो जाय, रटे जा राधे-राधे ॥२॥

या ब्रज की रज सुन्दर है, देवन को भी दुर्लभ है ।
मुक्तारज शीश चढाय, रटे जा राधे-राधे ॥३॥

ये वृन्दावन की लीला, नहीं जाने गुरु या चेला ।
ऋषि-मुनि गये सब हार, रटे जा राधे-राधे ॥४॥

वृन्दावन रास रचायो, शिव गोपी रूप बनायो ।
सब देवन करें विचार, रटे जा राधे-राधे ॥५॥

जो राधे-राधे रटतो, दुःख जनम जनम को कटतो ।
तेरो बेडो होतो पार, रटे जा राधे-राधे ॥६॥

जो राधे-राधे गावे, सो प्रेम पदारथ पावे ।
भव सागर होंवे पार, रटे जा राधे-राधे ॥७॥

जो राधा नाम न गायो, सो विरथा जनम गँवायो ।
वाको जीवन है धिक्कार, रटे जा राधे-राधे ॥८॥

जो राधा-जनम न होतो, रसराज विचारो रोतो ।
होतो न कृष्ण अवतार, रटे जा राधे-राधे ॥९॥

मंदिर की शोभा न्यारी, यामें राजत राजदुलारी ।
ड्यौढी पर ब्रह्म राजे, रटे जा राधे-राधे ॥१०॥

जेहि वेद पुराण बखाने, निगमागम पार न पाने ।
खडे वे राधे के दरबार, रटे जा राधे-राधे ॥११॥

तू माया देख भुलाया, वृथा ही जनम गँवाया ।
फिर भटकैगो संसार, रटे जा राधे-राधे ॥१२॥

# राधारमण कहो

जिस हाल में, जिस देश में, जिस वेष में, रहो... ।
राधारमण ...राधारमण ...राधारमण कहो ॥धृ॥

जिस काम में, जिस धाम में, जिस नाम में रहो... ।
राधारमण कहो ॥१॥

संसार में, परिवार में, घरबार में रहो... ।
राधारमण कहो ॥२॥

जिस रंग में, जिस ढंग में, जिस संग में रहो... ।
राधारमण कहो ॥३॥

जिस देह में, जिस गेह में, जिस स्नेह में रहो... ।
राधारमण कहो ॥४॥

जिस राग में, अनुराग में, वैराग में रहो... ।
राधारमण कहो ॥५॥

जिस मान में, सम्मान में, अपमान में रहो... ।
राधारमण कहो ॥६॥

जिस योग में, जिस भोग में, जिस रोग में रहो... ।
राधारमण कहो ॥७॥

इहलोक में, परलोक में, गोलोक में रहो... ।
राधारमण...राधारमण...राधारमण कहो ॥८॥

## बाजै बाजै री बधाई

बाजै-बाजै री बधाई मैया तेरे अँगना ||धृ||

बडो अनोखो लाला जायो,
स्याम रंग सब कौ मन भायौ,
ब्रजवासिन कौ मन हुलसायौ,
उगम-उमग... सब चले नन्द घर बांधै बँधना ।
बाजै-बाजै री बधाई मैया तेरे अँगना ||१||

नन्द भवन ऐसो सजवायौ,
बैकुण्ठहु कौ दियौ लजायौ,
सब लोकन तें घनौ सुहायौ,
टोल-टोल गोपी उठि घाई गावैं मँगना ।
बाजै-बाजै री बधाई मैया तेरे अँगना ||२||

ब्राह्मण अपने वेद पढत हैं,
नन्द बाबा जू दान करत हैं,
पाग पिछौरा ग्वाल लेत हैं,
गोपिन को दिये लहँगा, फरिया रतन जटित कँगना ।
बाजै-बाजै री बधाई मैया तेरे अंगना ||३||

नाच नाच के प्रेम दिखायो,
नन्द भवन में धूम मचायौ,
देय असीस सबन मन भायौ,
अरी जसोदा रानी तेरी जीवै छगना ।
बाजै-बाजै री बधाई मैया तेरे अँगना ||४||

## ऐसो रास रच्यो

ऐसो रास रच्यो वृंदावन, व्है रही पायल की झनकार ।
घुंगरु खूब छमाछम बाजैं,
बजने बिछुवा बहुतै बाजैं,
रवा कौंधनी केहू बाजैं,
अँग अँग मे गहना बाजैं, चुरियन की झनकार ।
ऐसो रास रच्यो वृन्दावन, व्है रही पायल की झनकार ॥१॥

बाजे भाँति भाँति के बाजैं,
झाँझ पखवाज दुन्दुभि बाजैं,
सारंगी और महुवर बाजैं,
बंसी बाजैं मधुर-मधुर बाजैं बीना के तार ।
ऐसो रास रच्यो वृन्दावन, व्है रही पायल की झनकार ॥२॥

राधा मोहन दै गलबैयाँ,
नाचैं संग-संग लै फिरकैंयाँ,
प्यार चलै शीतल सुखदैंया,
जामा पटुका लहँगा फरिया करैं सनन सनकार ।
ऐसो रास रच्यो वृन्दावन, व्है रही पायल की झनकार ॥३॥

# वैदिक राष्ट्र-गीत

भारतवर्ष हमारा प्यारा, अखिल विश्वसे न्यारा,
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन्! देश हमारा ॥धृ॥

हो ब्राह्मण विद्वान राष्ट्र में ब्रह्मतेज-व्रत-धारी,
महारथी हो शूर धनुर्धर क्षत्रिय लक्ष्य-प्रहारी ।
गौएँ भी अति मधुर दुग्ध की रहें बहाती धारा ॥१॥ हे भगवन्

भारत में बलवान वृषभ हो, बोझ उठायें भारी
अश्व आशुगामी हो, दुर्गम पथ में विचरणकारी ।
जिनकी गति अवलोक लजाकर हो समीर भी हारा ॥२॥ हे भगवन्

महिलाएँ हो सती सुन्दरी सद्गुणवती सयानी,
रथारूढ भारत-वीरों की करे विजय-अगवानी ।
जिनकी गुण-गाथासे गुंजित दिग्-दिगन्त हो सारा ॥३॥ हे भगवन्

यज्ञ-निरत भारत के सुत हो, शूर सुकृत-अवतारी,
युवक यहाँ के सभ्य सुशिक्षित सौम्य सरल सुविचारी,
जो होंगे इस धन्य राष्ट्र का भावी सुदृढ सहारा ॥४॥ हे भगवन्

समय-समयपर आवश्यकतावश रस-घन बरसाये,
अन्नौषध में लगें प्रचुर फल और स्वयं पक जायें ।
योग हमारा, क्षेम हमारा, स्वतः सिद्ध हो सारा ॥५॥ हे भगवन्

## हे नाथ!

हे नाथ! अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाये।
यह मन न जाने क्या-क्या कराये, कुछ बन न पाया अपने बनाये ॥

संसार में ही आसक्त रहकर, दिन-रात अपने मतलब की कहकर।
सुख के लिए लाखों दुःख सहकर, ये दिन अभी तक यों ही बिताये ॥१॥
हे नाथ! अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाये।

ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ, अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।
मैं आपको चाहूँ और पाऊँ, संसार का भय रह कुछ न जाये ॥२॥
हे नाथ! अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाये।

वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ, अपने हृदय में सद्भाव भर लूँ
नरतन है साधन भवसिन्धु तर लूँ ऐसा समय फिर आए ना आए ॥३॥
हे नाथ! अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाये।

हे नाथ! मुझे निरभिमानी बना दो, दारिद्र्य हर लो, दानी बना दो।
आनन्दमय विज्ञानी बना दो, मैं हूँ तुम्हारी आशा लगाये ॥४॥
हे नाथ! अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाये।

# छोड मन तू मेरा

छोड मन तू मेरा मेरा अंत में कोई नहीं तेरा
धन कारण भटक्यो-फिरयो, रिच्या नित नया ढंग ।
ढूँढ-ढूँढकर पाप कमाया, चली न कौडी संग
होय गया मालक बहु तेरा । छोड...
टेढी बाँधी पागडी, बण्यो छबीलो छैल ।
धरती पर गिणकर पग मेल्या, मौत निमाणी मैल
बखेर्‍या हाड-हाड तेरा ॥ छोड...
नित साबुन सै न्हाइयो, अतर फुलेल लगाय ।
सजी-सजायी पूतली तेरी पडी मसाणाँ जाय
जलाकर करी भसम-ढेरा ॥ छोड...
मदमातो, करडो, रहयो राख्या राता नैन
आयानें आदर नहिं दिन्यों, मुख नहि मीठा बैन
अंत जम-दूत आय घेरा ॥ छोड...
पर धन पर-नारी तकी, परचर्चास्यूं हेत
पाप-पोट माथे पर मेली, मूरख रहयो अचेत
हुआ फिर नरकाँ में डेरा ॥ छोड...
राम नाम सुमिर्‍यो नही, सत सँगस्यूँ नहि नेह ।
जहर पियो, छोडयो इमरतनै अंत पडी मुख खेह
साँस सब वृथा गया तेरा ॥ छोड...
दुरलभ देही खो दई, करम करया बदकार ।
हूँ हूँ हूँ करतो मरयो तूँ गयो जमारो हार ।
पडयो फिर जनम-मरण फेरा ॥ छोड...
काम क्रोध मद-लोभ तज, कर अंतर में चेत ।
मैं 'मेरे' ने छोड हृदेसे कर श्री हरिस्यूँ हेत ।
जनम यूँ सफल होय तेरा ॥ छोड...

# भगवान मेरी नैया

भगवान! मेरी नैया उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा लेना ।।धृ।।

दल बल के साथ माया घेरे जो मुझको आकर
तो देखते न रहना, झट आ के बचा लेना ।।१।।

सम्भव है झंझटों में मैं तुमको भूल जाऊँ ।
पर नाथ! कहीं तुम भी मुझको न भुला देना ।।२।।

तुम देव मैं पुजारी तुम इष्ट मैं उपासक ।
यह बात अगर सच है सच करके दिखा देना ।।३।।

## ।। सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।।

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।।

मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में ।
तू अकेला नाहीं प्यारे राम तेरे साथ में ।।
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।।१।।

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा ।
होगा वही प्यारे जो श्रीरामजी को भायेगा ।।
फल की आशा त्याग शुभ काम करते रहिये
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।।२।।

जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के ।
महिलों में राखे चाहे झोपडी में वास दे ।।
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।।३।।

आशा एक रामजी से, दूजी आशा छोड दे ।
नाता एक रामजी से, दूजा नाता तोड़ दे ।।
साधु संग, राम रंग, अंग अंग रंगिये ।
काम रस त्याग प्यारे राम रस पीजिये ।।४।।

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।।

# मै नहीं मेरा नहीं

मैं नही मेरा नहीं यह, तन किसी का है दिया ।
जो भी अपने पास है वह सब किसी का है दिया ॥धृ॥

देनेवाले ने दिया वह
भी दिया किस शान से
मेरा है यह लेनेवाला
कह उठा अभिमान से
मैं मेरा यह कहनेवाला मन किसी का है दिया ॥१॥

जो मिला है वो हमेशा
पास रह सकता नहीं
कब बिछुड जाए ये कोई
राज कह सकता नहीं
जिंदगानी का खिला मधुबन किसी का है दिया ॥२॥

जग की सेवा खोज अपनी
प्रीति उनसे कीजिए
जिंदगी का राज है यह
जानकर जी लीजिए
साधना की राहपर साधन किसी का है दिया ॥३॥

# चंदन है इस देश की माटी

चंदन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है ।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है ।।
हर शरीर मंदिर सा पावन,
हर मानव उपकारी है,
जहाँ सिंह बन गये खिलौने,
गाय जहाँ माँ प्यारी है ।
जहाँ सबेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है ।।१।।

जहाँ कर्म से भाग्य बदलते,
श्रमनिष्ठा कल्याणी है,
त्याग और तप की गाथाएं,
गाती कवि की वाणी है ।
ज्ञान जहाँका गंगा-जल सा, निर्मल है, अविराम है ।।२।।

इसके सैनिक समरभूमि में
गाया करते गीता है,
जहाँ खेत में हल के नीचे,
खेला करती सीता है ।
जीवन का आदर्श जहाँ पर, परमेश्वर का धाम है ।।३।।

# प्रसाद दान

## संत श्री ज्ञानेश्वरजी द्वारा प्रभु से मांगा गया

विश्वात्मक परमात्मा अब इस, वाग्-यज्ञ से राजी हो ।
प्रसन्न होकर मुझे प्रभो बस, यह वरदान प्रसादी दो ॥१॥

दुष्टों की वक्रता छूट वे सत्कर्मो में निरत रहें ।
जीव मात्र में सबसे सबकी, अटूट मैत्री हो जाए ॥२॥

अंधकार पापों का मिटकर स्वधर्म-रवि हो जाय उदित ।
प्राणिमात्र को मिलें वही जो, उन्हें रहा हो चिरवांछित ॥३॥

वर्षा सबविध मंगलताकी करनेवाले संतजन ।
भूमंडल पर सदैव उनका, सबसे मंगल हो मिलन ॥४॥

सचल कल्पतरु के उपवन जो, बोल रहे अमृत-सागर ।
सजीव चिंतामणि समूह के, मानो ये बस गये नगर ॥५॥

लांछन रहित चंद्रमा मानो, तापरहित रवि अथवा जो ॥
ऐसे सज्ञन मिले सभी को, बन समधीसम आप्त अहो ॥६॥

तीनों लोकों के बासी हो, सकल सुखों से पूर्ण सदा ।
आदिदेव को भजे निरंतर, प्रेमभाव से सभी सदा ॥७॥

और विशेष रूप से जिनका, जीवनधन यह ग्रंथ रहे ।
इह-परलोक कहीं भी उनके, विजय सर्वदा साथ रहे ॥८॥

यह सुनकर विश्वेश्वर बोले, यही मिलेगा प्रसाद दान ।
पाकर यह वर ज्ञानेश्वर भी हुए पूर्ण आनंद मगन ॥९॥

# संत श्री ज्ञानेश्वर की आरती

धर्म संस्थापक गुरुवर की । आरती श्री ज्ञानेश्वर की
रम्य इंद्रायणी तट विलसे
सिद्धेश्वर शिवजी नित्य बसे
आलंदी क्षेत्र निवासी की । आरती .......... ॥१॥

योगमय लीला तनु धारी
दिव्य लावण्य सुधा न्यारी
सच्चिदानंद सगुण हरिकी । आरती .......... ॥२॥

भित्तिका सजीव - सी चल दे
पशु भी वेद पाठ कर दे
कृपा अद्भुत ऐसी जिसकी । आरती .......... ॥३॥

मोहमय अंधकार हरने
वेदमत संस्थापित करने
पधारे श्री योगेश्वर की । आरती .......... ॥४॥

विश्व चिन्मय स्वरूप हरिका
बंधुसम भाव रहे सबका
बोध - अमृत - रस - दाता की । आरती .......... ॥५॥

## क्षमा-याचना

हे हृदयेश्वर, हे सर्वेश्वर
हे प्राणेश्वर, हे परमेश्वर ।
हे समर्थ, हे करुणासागर
बिनती यह स्वीकार करो ।।
भूल दिखाकर उसे मिटाकर
अपना प्रेम प्रदान करो ।
पीर हरो हरि, पीर हरो हरि
पीर हरो, प्रभु पीर हरो ।।

- **प्राप्तिस्थान :** धर्मश्री प्रकाशन,
  'धर्मश्री', मानसर अपार्टमेंटस्,
  पुणे विद्यापीठ मार्ग,
  पुणे ४११ ०१६.
- **मुद्रक :** प्रिंटवेल, पुणे. मोबाईल : ९८२२१-९२६७०


**मूल्य - १० रुपये**